14

मन के आत्मिक स्वभाव में नया होने से

(4:17–32)

इफिसियों को यदि अपने बुलाए जाने के योग्य चाल चलना था (4:1, 2), तो उनके लिए आवश्यक था कि वे एक हो जाएं (4:3–6, 13–16)। इसके अलावा हर मसीही में मन का नया हो जाना भी आवश्यक था। 4:17–32 पौलुस ने स्पष्ट निर्देश दिए कि वे सही दिशा में चलने के लिए कैसे मुड़ सकते थे।

''अंधकार से ज्योति में लौट आओ'' (4:17-19)

[17]इसलिए मैं यह कहता हूं, और प्रभु में जताए देता हूं कि जैसे अन्यजातीय लोग अपने मन की अनर्थ रीति पर चलते हैं, तुम अब से फिर ऐसे न चलो।

[18]क्योंकि उनकी बुद्धि अन्धेरी हो गई है और उस अज्ञानता के कारण जो उन में है और उनके मन की कठोरता के कारण वे परमेश्वर के जीवन से अलग किए हुए हैं। [19]और वे सुत्र होकर, लुचपन में लग गए हैं, कि सब प्रकार के गन्दे काम लालसा से किया करें।

आयत 17. आरम्भ करते हुए पौलुस ने उस आदेश के जिसे वह देने वाला था पीछे के महत्व, आवश्यकता और अधिकार पर ज़ोर दिया। **इसलिए मैं यह कहता हूं, और प्रभु में जताए देता हूं** योग्य चाल चलने के सम्बन्ध में 4:1 ताड़ना में पीछे की बात करता है और दिखाता है कि पौलुस परमेश्वर की ओर से बोलता और लिखता था। एक पल के लिए भी वह नहीं सोचता था कि उसकी शिक्षा उसके अपने विचार हैं; उसका मानना था कि परमेश्वर ने आत्मा के द्वारा उस पर ये शिक्षाएं प्रकट की हैं (1 कुरिन्थियों 2:10)। ''जताए देता'' के लिए शब्द (*marturomai*) में गवाही देने का विचार है, यानी पौलुस इन निर्देशों के लिए अपने गवाह के रूप में प्रभु को बुला रहा था। उसने घोषणा की कि वह ''मनुष्यों के ज्ञान की सिखाई हुई बातों में नहीं, परन्तु आत्मा की सिखाई हुई बातों में'' बोलता था (1 कुरिन्थियों 2:13)। पौलुस ने कहा कि आत्मिक लोग समझ जाएंगे कि उसके लेख ''प्रभु की आज्ञाएं'' हैं। एक अर्थ में पौलुस कह रहा था, ''जो मैं कहने वाला हूं उसे ध्यान से सुनो, क्योंकि यह प्रभु की आज्ञा है'' (देखें 1 कुरिन्थियों 14:37)।

पौलुस ने इफिसियों को यह आज्ञा दी: **कि जैसे अन्यजातीय लोग अपने मन की अनर्थ रीति पर चलते हैं, तुम अब से फिर ऐसे न चलो**। ''चलो'' (*peripateō*) वही क्रिया शब्द है जिसका इस्तेमाल 2:2 और 4:1 में हुआ है। ''अन्यजाति लोग'' इफिसी मसीही लोगों के जीवनों के विपरीत अभक्ति पूर्ण चाल या जीवन शैली वाले लोगों के लिए कहा गया है। मसीह

में विश्वासियों के लिए यदि वे अपने बुलाए जाने के योग्य चाल चलना चाहते थे, अपने समाज से पूरी तरह से अलग जीवन शैली की इच्छा करना आवश्यक था। जब अन्यजाति लोग मसीह में आए, तो उनके लिए अपने जीवन शैली को बदलना आवश्यक था। (अध्याय 2 अन्यजातियों के पहले के कामों से मसीह में आने के बाद उन से उम्मीद किए जाने वाले कामों में अन्तर करता है।) यहूदी या अन्यजाति मसीही लोगों के लिए योग्य चाल चलने के लिए, ऐसा प्रोत्साहन और ताड़ना देते जाते रहने की आवश्यकता थी जैसे पौलुस ने इस वचन में दी। इफिसुस में तीन प्रकार के लोग रहते थे: गैर मसीही यहूदी, अपरिवर्तित अन्यजाति और यहूदियों और अन्यजातियों दोनों में से बने मसीही लोग जिन्हें ''क्रूस के द्वारा'' परमेश्वर के साथ मिलाई गई मसीह की ''एक देह'' या ''एक नया मनुष्य'' के रूप में जाना जाता था (2:15, 16)। 1 कुरिन्थियों 10:32 में पौलुस ने ''यहूदियों'' और ''यूनानियों'' और ''परमेश्वर की कलीसिया'' की बात करते हुए इन तीनों प्रकार के लोगों की बात की।

[अन्यजाति के] **मन की अनर्थ रीति** में तीन विचार थे। (1) पौलुस अपने पाठकों के पहले के जीवनों और मसीह में उनके नये जीवनों स्पष्ट अन्तर को दिखा रहा था। क्या वह यह कह रहा था कि अन्यजातियों के जीवनों में सराहने के योग्य कोई बात नहीं है ? नहीं, बल्कि वह मसीह के बिना जीवन के अंधेरे पक्ष को समझा रहा था। (2) पौलुस इन मसीही लोगों को उस नये ढंग के अनुसार जो उन्हें मसीह में मिला था जीने को कह रहा था। उनकी जीवन शैलियों में ''तब'' और ''अब'' में जितना अन्तर होता उतना ही उनके समाज में उसकी शिक्षा प्रभावी होनी थी। (3) प्रेरित ने पहले विचार की प्रक्रिया के साथ आरम्भ किया और फिर कामों की बात की क्योंकि व्यक्ति पहले विचार करता और फिर वे विचार व्यवहार बनते हैं।

''अनर्थ'' (*mataiotēs*) उसकी बात है जो व्यर्थ या लक्ष्यहीन हो। ''अपने मन की व्यर्थ रीति'' में मूर्खतापूर्ण अनुमान और मन की भ्रष्टता शामिल थी (देखें रोमियों 1:21, 28)। अन्यजातियों को ऐसी सोच में छोड़ दिया गया था। सो, परमेश्वर के साथ सही सम्बन्ध की कमी के कारण, अन्यजाति सोच में एक भयानक दोष था। इस में वास्तविकता को समझना और छोड़ दिया है और मूर्खता का शिकार हो गई है।[1]

आयत 18. अन्यजाति लोगों के मन की स्थिति पौलुस के विवरण में जारी रहती है। **क्योंकि उनकी बुद्धि अन्धेरी हो गई है** ''मन की अनर्थ रीति'' की व्याख्या है। अन्यजातियों की सोच की मूर्खता इस लिए आई क्योंकि उस ज्योति को जिसे परमेश्वर ने दिया था दबाकर उसे त्याग दिया गया था। अविश्वासी अन्यजातियों और मसीही लोगों में अन्तर बिल्कुल स्पष्ट था कि विश्वासियों ने परमेश्वर की सच्चाई को ग्रहण कर लिया था और उनके ''मन की आंखें खुल गईं'' थीं। अन्यजातियों की समझ की आंखें जान-बूझकर अंधेरी की गई थीं इस कारण उन्हें उस सच्चाई और ज्योति के देने वाले **परमेश्वर के जीवन से अलग** कर दिया गया था। वे परमेश्वर से अलग हो गए थे, इस कारण उसमें कोई आत्मिक जीवन नहीं था। वे ''अपने अपराधों और पापों के कारण मरे हुए'' थे (2:1) और अपने पाप की मज़दूरी के रूप में केवल अनन्त मृत्यु की ही उम्मीद कर सकते थे (रोमियों 6:23)। ज्योति का उनका ठुकराना जीवन को ठुकराना था।

परमेश्वर के जीवन से अन्यजातियों का निकाला जाना **उस अज्ञानता के कारण** था जो उन में है। ज्ञान की उनकी कमी अपने आप में जान-बूझकर थी क्योंकि उन्होंने उस ज्योति को जिसे

परमेश्वर ने उन्हें दिया था ठुकरा दिया था (देखें रोमियों 1:18–23)। अन्यजाति लोग **उनके मन की कठोरता के कारण** अनजान थे। उन्होंने उस ज्योति और जीवन के विरुद्ध जो देने की उसने पेशकश की थी अपने मनों को जान-बूझकर कठोर किया और परमेश्वर को न जानना चुना। ''कठोरता'' (*pōrōsis*) का अनुवाद है और नये नियम में इसका इस्तेमाल अलंकारिक रूप में ''कठोरता या अंधेपन'' के रूप में किया जाता है।[2] नये नियम में आयत 18 और दो अन्य जगहों पर भी मिलता है (मरकुस 3:5; रोमियों 11:25), इसका इस्तेमाल ''मानसिक या नैतिक कठोरता'' के रूप में हुआ है।[3] ''मन'' (*kardia*) का अनुवाद है जिसका अर्थ ''शारीरिक, आत्मिक और मानसिक जीवन की गलती'' है।[4] जो व्यक्ति जान-बूझकर अपने मन को कठोर करता है उसे परमेश्वर की कोई समझ नहीं है, वह अज्ञानी है और आत्मिक अंधकार में रहता है।

आयत 19. रोमियों 1 की तरह यहां पर बताए गए लोगों ने उन्हें दी गई ज्योति की पेशकश को ठुकरा दिया था; उनके मनों को कठोर कर दिया गया था और वे और भी दुष्ट हो गए थे। **वे** पहले बताए गए लोगों के लिए कहा गया है जो अपने कठोर होने के परिणामों के कारण फस गए थे। **सुन होकर** *apēlgēkotes* का अनुवाद है और इसका अर्थ है ''दर्द या दुख को महसूस करना बन्द कर देना ... *उदासीन होना।*''[5] विवेकी की पीड़ाओं को अनुभव करने की योग्यता से बाहर इन अन्यजाति **लुचपन में लग गए** (*paredōkan*) थे। यानी उन्होंने अपने आपको पूर्ण रूप में पापपूर्ण जीवन शैली में दे दिया था। वचन कहता है कि उन्होंने अपने आपको **सब प्रकार के गंदे काम लालसा से** करने को दे दिया था। यह कुछ ऐसा नहीं था जो अन्यजातियों के लिए किया गया हो, बल्कि कुछ ऐसा था जिसे करना उन्होंने चुना था।

अन्यजातियों की पसन्द ''लुचपन,'' ''गंदे काम'' और ''लालसा'' तीनों शब्द बता देते हैं। ''लुचपन'' (*aselgeia*) का अर्थ है ''अपमानजनक कामुकता''; ''गंदे काम'' (*akatharsia*) में ''विस्तृत अर्थ में नैतिक अशुद्धता'' शामिल है और ''लालसा'' (*pleonexia*) ''बेकाबू लालची इच्छा'' का अर्थ देता है।[6] अन्यजातियों की पसन्दों के कारण, परमेश्वर ने उन्हें उनके अभक्तिपूर्ण व्यवहार पर छोड़ दिया (देखें रोमियों 1:24, 26, 28)।

''पुरानी मनुष्यता से नई मनुष्यता में लौट जाओ'' (4:20-24)

''पुराने मनुष्यत्व को छोड़ दो'' (4:20–22)

[20]पर तुम ने मसीह की ऐसी शिक्षा नहीं पाई।

[21] बरन तुम ने सचमुच उसी की सुनी, और जैसा यीशु में सत्य है, उसी में सिखाए भी गए। [22]कि तुम अगले चाल-चलन के पुराने मनुष्यत्व को जो भरमाने वाली अभिलाषाओं के अनुसार भ्रष्ट होता जाता है, उतार डालो।

आयत 20. पौलुस उनके वर्तमान जीवनों को उनके पहले के जीवनों से अलग करने लगा। उसने कहा, **पर तुम ने मसीह की ऐसी शिक्षा नहीं पाई**। NLT में कहा गया है, ''परन्तु तुम्हें इस प्रकार से नहीं सिखाया गया था जब तुम्हें मसीह के बारे में बताया गया था।''

4:17 का आरम्भ पौलुस ने इस भाग में यह कहते हुए किया, ''तुम *अब से* फिर ऐसे न

चलो।'' ''पर तुम ने नहीं पाई'' का अक्षरशः अनुवाद ''पर तुम नहीं'' हो सकता है। पौलुस के शब्दों में ''तुम'' को ज़ोर देकर ''अन्यजातियों'' से अलग किया गया (4:17)। ''पाई'' क्रिया शब्द अनिश्चित भूतकाल में है जो बिना किसी शक के इफिसियों के मन परिवर्तन की बात करता है। ''मसीह की शिक्षा'' मूल में ''मसीह से सीखो'' है। फिलिप्पियों 3:10 में ''[मसीह] को जानने की अपनी इच्छा जताई,'' और कुलुस्सियों 2:6 में उसने उनकी बात की जिन्होंने ''मसीह यीशु को प्रभु मान लिया'' था। इफिसियों 4:17-32 सहित इन आयतों में केवल मसीह को जानने या मसीह की शिक्षा को जानने से कहीं अधिक है। इन आयतों में मसीह व्यक्तिगत कारक है; उसी का प्रचार किया जाता है, उसी को ग्रहण किया जाता है, उसी को जाना जाता है और उसी को इफिसियों ने सिखा था।

आयत 21. पौलुस ने अपनी ताड़ना को खोल कर समझाया: **वरन तुम ने सचमुच उसी की सुनी, और जैसा यीशु में सत्य है, उसी में सिखाए भी गए।** ''वरन सचमुच'' का अनुवाद यूनानी भाषा में दो कृदंतों (*ei*, ''यदि'') और (*ge*, ''वास्तव में, देखते हुए'') का अनुवाद है। दोनों को मिलाने पर बनने वाले शब्द ''सही माने जाने वाली चीज़ का सुझाव देता है।''[7] पौलुस जो कहने वाला था उस पर सवाल या शक नहीं कर रहा था बल्कि पक्की मान्यता बना रहा था।

''वरन तुम ने उसी की सुनी'' कहते हुए पौलुस इफिसियों के मन की बात कर रहा था (देखें 1:13)। उन्होंने इस बात में ''उसी की सुनी'' की उन्होंने प्रेरित पौलुस द्वारा सत्य का वचन बताए जाने से उसके संदेश को सुना था (देखें कुलुस्सियों 1:5; प्रेरितों 19:1-10)।

> मसीह की सुनने के सम्बन्ध में यूनानी धर्मशास्त्र में मसीह के लिए सर्वनाम ''सुनना'' ... के साथ कर्मकारक है। [इस शब्द] के साथ जिसके शब्द कोई सुनता है वह सम्बन्धकारक में खड़ा होता है, जिसके बारे में सुन रहा होता है वह कर्मकारक में होता है। ... सो मसीह के विषय में सुनना मसीह के बारे में बताने वाले को ग्रहण करना होता है।[8]

इफिसियों ने मसीह और उसके मार्ग के विषय में सुना था (4:20)। इस आरम्भिक शिक्षा के बाद उन्होंने मसीह में बपतिस्मा ले लिया था। ''और'' उसी में दिखाए भी गए भी थे। उस शिक्षा की बात करते हैं जो सुसमाचार के आरम्भ में सुनने के *बाद* मिली थी जिससे वे मसीही बनने के लिए प्रेरित हुए थे। उन्हें अपने मन परिर्वतन के बाद ''उसी में'' और सिखाया गया था जिसमें ''उसी में'' उन का आत्मिक विकास हुआ।

''जैसा यीशु में सत्य है'' इस बात को याद दिलाता है कि यीशु सत्य की मूर्त है (देखें यूहन्ना 14:6)। यीशु के विषय में जो सच्चाई इफिसियों ने सुनी थी और मानी थी और जो सच्चाई उन्हें ''सी में'' सिखाई गई थी उसी ने उन्हें अन्यजातियों की तरह न रहने की बल्कि उस नये जीवन में रहने का निर्देष दिया जो उन्हें मसीह में मिला था।

आयत 22. आयतें 22 से 24 में तीन कामों का उल्लेख है। क्या प्रेरित बता रहा था कि इफिसियों को क्या करना सिखाया गया था (4:21), या उनके काम उन्हें भाइयों द्वारा दी गई शिक्षा का परिणाम थे। यह सम्भवतया आवश्यक नहीं था क्योंकि पौलुस ने कहा, ''तुम ने सुनी ... सिखाए भी गए'' और ''उतार डालो।'' ऐसा लगता है कि पौलुस जो कुछ सिखाया गया था। सुसमाचार के उनके आज्ञापालन के परिणाम के साथ उन्हें समझा रहा था। अन्य शब्दों में उन्होंने

सुना था, उन्हें सिखाया गया था और उन्होंने मसीही बनने पर ''पुराना मनुष्यत्व'' उतारकर शिक्षा का मान लिया था।

पहला काम **पुराने मनुष्यत्व को उतार** डालना है। यह आयत सही सही संकेत नहीं करती कि यह काम कब हुआ; परन्तु रोमियों 6:2-6 में कहता है कि जिन लोगों ने मसीह में बपतिस्मा लिया है वे उसके साथ दफ़नाए गए हैं। इस प्रकार से जो व्यक्ति पाप के लिए मर जाता है तो उसे नये जीवन के लिए जिलाया जाता है। मसीह के साथ मरकर जी उठने वालों के बावजूद, पौलुस ने आयत 6 में कहा, ''हम जानते हैं कि हमारा पुराना मनुष्यत्व क्रूस पर चढ़ाया गया ताकि हमारा पाप का शरीर नष्ट हो जाए ...।'' ''पुराना मनुष्यत्व, ... नया मनुष्यत्व'' की इस आयत की अवधारणा (4:20-24) रोमियों 6 के शब्द लिखते समय में पौलुस के मन में थी। इसके अलावा पौलुस ने पुष्टि की कि जिन्होंने मसीह में बपतिस्मा लिया है, उन्होंने ''मसीह को पहन लिया'' (गलातियों 3:27) था जो ''नये मनुष्यत्व'' का संकेत है। इसलिए 4:22 में काम करने का समय परिभाषित किया गया है-पुराने मनुष्यत्व को उतार देना *बपतिस्मा लेने के समय* होता है।

''पुराना मनुष्यत्व,'' ''पुराना'' (*palaios*) के सम्बन्ध में ''घिस जाना, बुढ़ापे से कमज़ोर हो जाना, व्यर्थ''[9] ''मनुष्यत्व'' (*anthrōpos*) का संकेत है। यह हवाला इफिसियों को दिखाता है जब वे उद्धार पाए हुए नहीं थे और पाप का उन पर कब्जा था। ''पुराना मनुष्यत्व'' को उतारना केवल कुछ बुरी आदतों को त्यागना नहीं था, बल्कि अतीत के साथ निर्णायक रूप में सम्बन्ध तोड़ देना था। जो उतार दिया गया था वह ''पूरा पुराना व्यक्ति था जो पाप के कब्जे वाला जीवन जीने में अगुआई कर रहा था।''[10]

पुराना मनुष्यत्व **भरमाने वाली अभिलाषाओं के अनुसार भ्रष्ट होता जाता** था। ''जो भ्रष्ट होता जाता है'' वर्तमान कृदंत निरन्तर प्रक्रिया की बात करता है जिसमें पुराना मनुष्यत्व बुरे से बुरा होता जा रहा था। ''अभिलाषाओं'' *epithumia* का अनुवाद है और इस संदर्भ में इसका अर्थ ''लालसा भरी, कामुक इच्छा'' है।[11] ये बुरी इच्छाएं इस अर्थ में ''भरमाने वाली'' थीं कि इन में सुखद जीवन की प्रतिज्ञा तो थी परन्तु यह भ्रष्ट जीवन की ओर ले जाती थी। भरमाने वाला चरित्र अन्यजातियों का तरीका था (2:3)। विश्वासियों ने इस जीवन शैली का त्याग कर दिया था, जो सत्य के सुसमाचार के विपरीत था (4:14, 15; 2 थिस्सलुनीकियों 2:10)। जीवन की झूठी फिलॉस्फी उन लोगों को सांस लेती है जो सच्चाई और झूठ में अन्तर नहीं करते हैं (देखें कुलुस्सियों 2:8)।

''नये बनते जाओ'' (4:23)

[23]और अपने मन के आत्मिक स्वभाव में नये बनते जाओ।

आयत 23. तीन कार्यवाहियों में से पहली कार्यवाही ''उतार डालाओ'' कुछ ऐसा था जिसे कालांतर में इफिसियों ने बपतिस्मा लेने के समय किया था। दूसरी कार्यवाही प्रक्रिया थी, **अपने मन के आत्मिक स्वभाव में नये बनते** जाना। ''नये बनते'' (*ananeoō*) जाने के लिए ''अंदरूनी सुधार से नये बनना'' है।[12] यहां पर इस्तेमाल हुआ व्याकरणीय रूप ''बिना किसी ऐसे संकेत के कि कोई कार्य कब हुआ, निरन्तर कार्य किए जाने'' का संकेत देता है और

दिखाता है कि ''कर्त्ता अपने ऊपर या अपने सम्बन्ध में किसी प्रकार से कार्य कर रहा [है]।''[13] पुराने मनुष्यत्व को उतार डालने की क्रिया चाहे बपतिस्मा लिए जाने के समय होने वाली एक ही बार की क्रिया थी, पर नये होने की यह निरन्तर कार्यवाही मसीही व्यक्ति के जीवन में चलती रहती है।

''आत्मिक'' यहां पर पवित्र आत्मा के लिए नहीं है क्योंकि पौलुस ने ''*अपने* मन के आत्मिक स्वभाव'' की बात की। ''मन'' व्यक्ति की बौद्धिक क्षमता होती है जिस में तर्क देने और समझने की उसकी योग्यता अर्थात ''नैतिक सोच का अंग'' होता है[14] (देखें 4:17 और रोमियों 1:28; 7:23)। ''आत्मिक'' का उल्लेख ''मन'' के सम्बन्ध में हुआ है, परन्तु दोनों अलग-अलग हैं। परमेश्वर के साथ संवाद का आनन्द व्यक्ति के व्यक्तित्व को मिलता है और इसी को उसके स्वरूप पर बनाया गया है (देखें उत्पत्ति 1:26, 27)। 1 कुरिन्थियों 14:14 में पोलुस ने ''आत्मा'' और ''मन'' के बीच अन्तर बनाया है। समझ यह होना आवश्यक है कि व्यक्तित्व (आत्मा) और सही ढंग से तर्क देने की योग्या (मन) का दिन प्रतिदिन नया होना आवश्यक है (देखें रोमियों 12:2; 2 कुरिन्थियों 4:16)। यहां पर इस्तेमाल हुआ क्रिया रूप सुझाव देता है कि मसीही व्यक्ति अपने आप में नयापन लाने के लिए सक्रिय रूप में काम कर रहा है।

''नये मनुष्यत्व को पहन लो'' (4:24)

24और नये मनुष्यत्व को पहिन लो, जो परमश्ेवर के अनुसार सत्य की धार्मिकता, और पवित्रता में सृजा गया है।

आयत 24. इस संदर्भ में पौलुस द्वारा बताया गया तीसरा कार्य **नये मनुष्यत्व को पहिन** लेना था। पुराने मनुष्यत्व को उतार डालने की तरह यह किसी अनिश्चित समय में किया जाने वाला काम है। उतार दिया जाना बपतिस्मे के समय हुआ और उसी समय नये मनुष्यत्व को पहन लिया जाना भी हुआ। जब कोई मसीह में बपतिस्मा लेता है तो वह मसीह में आ जाता है और एक ''नई सृष्टि'' बन जाता है (2 कुरिन्थियों 5:17)। मसीह में होने के कारण वह देह अर्थात कलीसिया का अंग और परमेश्वर के घराने और परिवार का सदस्य बन जाता है (देखें 2:19)।

परमेश्वर के बालक के रूप में मसीही व्यक्ति के लिए अपने ऊपर परिवार का रंग चढ़ाना आवश्यक है। इसलिए पौलुस ने कहा कि नया मनुष्यत्व **परमेश्वर के सदस्य** है। नया मनुष्यत्व समय में नया नहीं है (पौलुस इसे व्यक्त करने के लिए *neos* का इस्तेमाल करता), बल्कि गुण में नया है (जिसे *kainos* के द्वारा व्यक्त किया गया है)। यह नयापन इस अर्थ में ''पुराने से उलट'' है कि पुराना ''उम्र के साथ बिगड़ चुका'' है।[15] इस पत्र में बाद में पौलुस ने इसी विचार को इन शब्दों के साथ व्यक्त किया ''प्रिय बालको के समान परमेश्वर का अनुकरण करो'' (5:1) प्रक्रिया एक सृष्टि है। जिस प्रकार से परमेश्वर ने भूमि की मिट्टी से पहले मनुष्य को रचा और उसे शारीरिक जीवन का श्वास दिया, उसी प्रकार से उसने पाप में गिरे मनुष्य में से उसे उनके आत्मिक जीवनों में नये प्राणी बनाया है। हमारा सामना पहले सृष्टि की अवधारणा से हुआ था जब पौलुस ने कहा कि विश्वासी लोग ''भले कामों के लिए सृजे गए'' थे (2:10)।

इस प्रक्रिया में परमेश्वर और मनुष्य के सहयोग को इस बात में देखा जा सकता है कि परमेश्वर पहल करता है (2:1–22) और हमें सुसमाचार को ग्रहण करके बपतिस्मे में मसीह को पहनकर नये मनुष्यत्व को पहनने की जिम्मेदारी निभानी है (गलातियों 3:27)।

धार्मिकता उन लोगों को दिया गया गुण है, जो मसीही बनते हैं। मनुष्य की अपने आप में कोई धार्मिकता नहीं है; जब वह पाप में रहता था, तो वह ''धर्म की ओर स्वतन्त्र'' था (रोमियों 6:20)। मसीह संसार में मनुष्य की धार्मिकता बनने के लिए आया (1 कुरिन्थियों 1:30) जिस में परमेश्वर ने ''जो पाप से अज्ञात था, उसी को उस ने हमारे लिए पाप ठहराया, कि हम उस में होकर परमेश्वर की धार्मिकता बन जाएं'' (2 कुरिन्थियों 5:21)। इसलिए जब कोई व्यक्ति सुसमाचार की आज्ञा मानता है तो वह धार्मिकता का दास बन जाता है (रोमियों 6:17, 18)। परमेश्वर ने मसीह में आने वालों को धर्मी होने की घोषणा कर दी है; नये मनुष्यत्व की सृष्टि का सही उद्देश्य है। यह धार्मिकता अपने आपको दिखाती है जब हम दूसरों के साथ अपने सम्बन्धों में वह कर रहे होते हैं जो सही है।

पवित्रता परमेश्वर के जैसे होने का भी सुझाव देता है, और इफिसियों को पवित्र होने के लिए कहा गया था जैसा परमेश्वर पवित्र है (देखें 1 पतरस 1:16)। इसके अलावा क्योंकि धार्मिकता परमेश्वर का गुण है जिसकी अपने मानवीय सम्बन्धों में विश्वासियों को नकल करनी है इस कारण पवित्रता परमेश्वर के जैसे बनना और परमेश्वर को वह देना है जो उपयुक्त है। नया मनुष्यत्व दूसरों के साथ अपने सम्बन्धों और परमेश्वर के साथ अपने सम्बन्धों में इन दोनों जिम्मेदारियों को पूरा करता है। धर्मी और पवित्र होना **सत्य के** होना है; यानी परमेश्वर के प्रकाशन के सत्य का सत्य है जो अन्यजातियों की अपवित्र और अधार्मिक जीवन शैली के गुणों को बताता और उसका विरोध करता है (4:17–19)।

''झूठ से सच्चाई की ओर लौट आओ'' (4:25)

25इस कारण झूठ बोलना छोड़कर हर एक अपने पड़ोसी से सच बोल, क्योंकि हम आपस में एक दूसरे के अंग हैं।

मसीही व्यक्ति के रूप में चलने या रहने के लिए मसीह की देह के अंग के रूप में सही ढंग से काम करना सीखना शामिल है, परन्तु व्यक्तिगत उन्नति भी आवश्यक है। पौलुस ने इस प्रक्रिया को मन के आत्मिक स्वभाव में नया होना बनना है। 4:25–32 में उसने स्पष्ट बताया कि मसीह में आने वाला व्यक्ति किस प्रकार से अंधकार से ज्योति में, पुराने मनुष्यत्व से नई सृष्टि में आ सकता है।

आयत 25. यहां दी गई ताड़ना जकर्याह 8:16 का उदाहरण है। इस बात का आरम्भ उस व्यावहारिक प्रासंगिकता के साथ होता है जिसका अर्थ नये मनुष्यत्व को पहन लेना, परमेश्वर का अनुकरण करना और अपने बुलाए जाने के योग्य चाल चलना है। **इस कारण** पौलुस की अभी अभी लिखी बात को उस से जोड़ देता है जो वह कहने को था। मसीही लोगों के रूप में हमें दूसरों को सच बताना है, न केवल इसलिए कि हम परमेश्वर के हैं बल्कि इसलिए भी क्योंकि **हम आपस में एक-दूसरे के अंग हैं**। इस पूरे पत्र में पौलुस ने दिखाया कि कलीसिया मसीह

की देह है जिसका सिर मसीह है। शारीरिक देह के अंगों की तरह यदि मसीह की आत्मिक देह के अंगों को सिर की इच्छा को पूरा करना और एक-दूसरे की सेवा करना आवश्यक है जैसे देह को **सच बोल** [ना] आवश्यक है। ''झूठ'' के लिए यूनानी संज्ञा (*pseudos*) हर प्रकार के झूठ को कहा गया है जिसमें झूठ बोलना ''एक मुख्य बात'' है।[16] **झूठ बोलना छोड़कर** के लिए यूनानी शब्द संकेत देते हैं कि झूठ को सदा के लिए वैसे ही छोड़ देना आवश्यक था जैसे पुराने मनुष्यत्व को सदा के लिए उतार दिया जाना।[17] इस में हर प्रकार का भ्रम, अधूरी सच्चाई के द्वारा भ्रमित करने इच्छा और तथ्यों को न बताना शामिल था जिसकी पूरी सच्चाई मांग करती थी। इस वाक्यांश के साथ पौलुस ने नये मनुष्यत्व के नैतिक व्यवहार की व्यावहारिक और स्पष्ट चर्चा का आरम्भ किया, सच बोलने की आवश्यकता के साथ आरम्भ करते हुए। इसके उलट करने का अर्थ अपने भाइयों और बहनों के साथ दुर्व्यवहार करके पुराने मनुष्यत्व में लौट जाना है।

''क्रोध से नियन्त्रण में लौट आओ'' (4:26, 27)

26क्रोध तो करो, पर पाप मत करोः सूर्य अस्त होने तक तुम्हारा क्रोध न रहे।
27और न शैतान को अवसर दो।

आयत 26. पौलुस ने अपनी बात कहने के लिए पुराने नियम की आयत भजन संहिता 4:4 का हवाला दोहरया। **क्रोध तो करो, पर पाप मत करो**। पौलुस ''क्रोध करने'' की अनुमति नहीं देह रहा था, परन्तु उसने इस बात को समझा कि क्रोध होगा ही। आयतें 26 और 27 की ताड़नाएं क्रोधित होने के खतरे को दिखार्ती हैं। आयतें 26 और 31 में पौलुस ने ''क्रोध'' शब्द का इस्तेमाल किया—*orgizō* (4:26) और *orgē* (4:31)। संदर्भ से निर्णय करने पर *orgizō* वश में क्रोध है, जबकि *orgē* पूरी तरह से खुली छूट दिया हुआ क्रोध या घृणा है जो अनियन्त्रित हो सकता है। धर्मी क्रोध है, क्योंकि परमेश्वर अपना क्रोध *orgē* दुष्टता और अधार्मिकता पर उण्डेलता है (रोमियों 1:18)। अपनी ईश्वरीयता का बहुतायत से प्रमाण दिए जाने के बावजूद उस पर विश्वास करने की कुछ लोगों की अनिच्छा से मसीह क्रोधित *orgē* हुआ था (मरकुस 3:5) परन्तु उसने अपने क्रोध को केवल धर्मी ढंग से जताया।

हर प्रकार का क्रोध गलत नहीं है, परन्तु क्रोध खतरनाक हो सकता है। जब हम क्रोध में होते हैं तो हम पाप भरी बातें कर या कह सकते हैं। पौलुस ने कहा, ''क्रोध तो करो, पर पाप मत करो।'' इसके अलावा यह कहते हुए कि **सूर्य अस्त होने तक तुम्हारा क्रोध न रहे** पौलुस ने क्रोध की एक निश्चित स्थिति की मनाही की। इस वाक्यांश में ''क्रोध'' (*parorgismos*) के लिए अलग शब्द है और पौलुस की पहले कही गई बात को फिर से ज़ोर देता है चाहे ''इसमें उदासीन बल है और उस क्रोध को उसका संकेत देता है जिसे भड़काया गया है।''[18] क्रोध हमारे जीवनों में भड़क सकता है, परन्तु हमें चौकस होने की आवश्यकता है कि क्रोधित होने पर हम क्या कहते या करते हैं और फिर क्रोध पर काबू पाना आवश्यक है।

आयत 27. और न शैतान को अवसर दो। पहले ही किए जा रहे काम को करने की मनाही करता है। पौलुस कह रहा था, ''शैतान को काम करने का अवसर [या मौका] देना बन्द करो।''[19] गलत बात पर क्रोध शैतान को हमारे जीवनों में आने देता है क्योंकि यह पाप की ओर

ले जाता है। पौलुस ने "शैतान" को (प्रकाशितवाक्य 12:9), बहुत ही वास्तविक आत्मिक शक्ति के रूप में पहचाना। 2:2 में चाहे नाम नहीं दिया गया परन्तु "आकाश के अधिकार के हाकिम, अर्थात वह आत्मा जो अब भी आज्ञा न मानने वालों में कार्य करता है" की बात करते हुए वह शैतान की ही बात कर रहा था। बाद में इस पत्र में पौलुस ने "शैतान की युक्तियों" और "उस दुष्ट के जलते हुए दियों" की बात की जिनका सामना दुष्टता के साथ आत्मिक युद्ध में मसीही लोगों को करना है (6:10–16)। अनियन्त्रित क्रोध शैतान को अवसर दे देता है, नये मन के साथ नये मनुष्यत्व के रूप में रहने के विरुद्ध काम करता है और योग्य चाल चलने का विरोध करता है।

"चोरी करने से काम करने में लौट आओ" (4:28)

[28]चोरी करने वाला फिर चोरी न करे; वरन भले काम करने में अपने हाथों से परिश्रम करे; इसलिए कि जिसे प्रयोजन हो, उसे देने को उसके पास कुछ हो।

आयत 28. फिर पौलुस ने चोरी करने की बात की: **चोरी करने वाला फिर चोरी न करे**। व्यवस्था में चोरी करने की मनाही की गई थी (निर्गमन 20:15; लैव्यव्यवस्था 19:11; व्यवस्थाविवरण 5:19), और नये नियम में भी इस मनाही को दोहराया गया है (मरकुस 10:19; रोमियों 13:9)। इस नियम पर ज़ोर दिए जाने की आवश्यकता इफिसुस में पड़ी होगी, जहां चोरी करना कम से कम स्वीकार तो किया जाता था। ऐसा नहीं था कि ये मसीही लोग किसी समय चोर होते थे। परन्तु कुछ लोग अभी भी चोरी करते थे। यहां पर इस्तेमाल हुआ क्रिया शब्द निरन्तर या बार बार किए जाने वाले कार्य का संकेत देता है।[20] पौलुस कह रहा था, "चोरी करना बंद करो!"

चोरी करने का प्रतिकारक कठिन परिश्रम करना था–**वरन भले काम करने में अपने हाथों से परिश्रम करे**। आदम को पाप में गिरने से पहले अदन की वाटिका में रखे जाने से पहले ज़िम्मा दिया गया था कि वह "काम करे और उसकी रक्षा करे" (उत्पत्ति 2:15)। गिरने के बाद आदम ने काम करना जारी रखा था चाहे अब उसका काम बहुत अधिक कठिन हो गया था (उत्पत्ति 3:17–19)। काम व्यवस्था की दस आज्ञाओं में भी दिया गया था, जिसमें परमेश्वर ने कहा था, "छह दिन तो तू परिश्रम करके अपना सब काम काज करना" (निर्गमन 20:9)। नये नियम में इस नियम को समझा गया और यीशु पर सातवें दिन "काम करके" सब्त को तोड़ने का आरोप लगाया गया था (देखें मरकुस 2:23–28; 3:1–6)। पौलुस आम तौर पर तम्बू बनाने का अपना कारोबार करके अपनी रोजी रोटी कमाता था (प्रेरितों 18:3)। वह न केवल खुद काम करता था बल्कि उसने यह कहकर कि "यदि कोई काम करना न चाहे, तो खाने भी न पाए" (2 थिस्सलुनीकियों 3:10; देखें 1 कुरिन्थियों 4:12; 1 थिस्सलुनीकियों 4:11, 12)। दूसरों को भी काम करने के लिए प्रेरित किया।

काम करने के लिए पौलुस की प्रेरणा दोहरी थी। (1) काम लाभकारी है। व्यक्ति के लिए वह काम करना जो अच्छा हो रचनात्मक है ताकि वह अपनी आवश्यकताओं को पूरा कर सके। समाज के लिए काम उपयोगी है, क्योंकि इससे वस्तुएं और सेवाएं मिलती हैं। जब लोग व्यस्त और उत्पादन पैदा करने वाले होते हैं तो वे प्रसन्न रहते हैं। काम से लोगों को सम्मान भी मिलता है। (2) काम से **जिसे प्रयोजन हो उसे देने को** मिलता है। पहली सदी की कलीसिया में ऐसा

किया जाता था। उदाहरण के लिए यरूशलेम की कलीसिया के लोग एक दूसरे के साथ बांटते थे ताकि उनके बीच किसी ज़रूरतमंद की आवश्यकता पूरी हो जाए (प्रेरितों 2:45; 4:34)। यहूदिया में अकाल पड़ने पर यूरोप और एशिया माइनर की कलीसियाओं ने अपने जरूरतमंद भाइयों के लिए राहत सामग्री भेजी थी (प्रेरितों 11:29, 30; रोमियों 15:26; 2 कुरिन्थियों 8; 9)। पौलुस ने रोमियों को समझाया कि "पवित्र लोगों को जो कुछ अवश्य हो, उस में योगदान दो" (रोमियों 12:13)।

> इस नैतिक वाक्य [4:28] को पूरा लेने पर यह पुराने मनुष्यत्व को उतारने और नये को पहनने की बुलाहट में शामिल क्रांतिक परिवर्तन को बड़ी सुन्दरता से दिखाता है। चोर अब लोकहित्तेशी बन गया है जिसमें जीवन के पुराने ढंग को जो अवैध था छोड़कर उदारता से देने के नये ढंग को अपना लिया है।[21]

"गन्दी बातों से उन्नति में लौट आओ" (4:29)

[29]कोई गन्दी बात तुम्हारे मुंह से न निकले, पर आवश्यकता के अनुसार वही जो उन्नति के लिए उत्तम हो, ताकि उस से सुनने वालों पर अनुग्रह हो।

आयत 29. नया मनुष्यत्व मसीही व्यक्ति की बोलचाल में भी दिखाई देना आवश्यक है। गलत बातों से देह की एकता और योग्य चाल जिसकी बात इस अध्याय में पौलुस ने पहले की थी, बिगड़ सकती है। पिछली दो ताड़नाओं में पौलुस ने प्रेरणादायक बात से पहले दो बातें भी कीं। आयत 29 में उसी नमूने को लिया गया, जब उसने गन्दी बातों की मनाही करते हुए अच्छी बातें करने को प्रोत्साहित किया। मसीही लोगों को केवल उन्हीं शब्दों का इस्तेमाल करना चाहिए जिन से उन्नति हो ताकि पवित्र आत्मा शोकित न हो (4:30)। **गन्दी** के लिए शब्द (*sapros*) का मूल अर्थ है "*घिसी पिटी* और इस्तेमाल के अयोग्य, ... *बेकार*।"[22] यह "भला" का उलट है जो ऐसी चीज़ का सुझाव देता है जो "लाभ रहित, किसी के किसी काम की नहीं" है।[23]

एकता को भंग करने वाले और दूसरों में फूट डालने वाली बातों की जगह इफिसियों को ऐसी बातें करने के लिए प्रोत्साहित किया गया जो **आवश्यकता के अनुसार उन्नति के लिए उत्तम हो**। देह के हर अंग के लिए कलीसिया की उन्नति (बनाने) में योगदान देना आवश्यक था (4:12, 16)। देह को बनाने का एक तरीका ऐसी बातें करना था जिन से सदस्यों को वह करने के लिए प्रोत्साहन मिले जो उन्हें बनना चाहिए और वह करने की जैसे उन्हें करना चाहिए। ऐसी बातों से **सुनने वालों पर अनुग्रह** होगा ही। "अनुग्रह हो" का अर्थ अनुग्रह से भरी बातें कहना है जिससे किसी दूसरे पर "लाभ हो।"[24] योग्य चाल चलना और नये मनुष्यत्व का नया मन, जिस पर पौलुस ने 4:1–32 में फोकस किया, मसीही व्यक्ति की बातों और कामों से जिया जाता है।

"आत्मा को शोकित करने से उसे आनन्द देने वाले बन जाओ" (4:30)

[30]और परमेश्‍वर के पवित्र आत्मा को शोकित मत करो, जिस से तुम पर छुटकारे के दिन

के लिए छाप दी गई है।

आयत 30. इस नकारात्मक वर्तमान अवश्य माननीय का अर्थ है, "उन बातों को करके जिसकी इसने मनाही की है परमेश्वर के पवित्र आत्मा को दुखी करना बन्द करो।" परमेश्वर का वचन पवित्र आत्मा की ओर से प्रेरणा देकर प्रकट किया गया है (देखें 1 कुरिन्थियों 2:13; 2 तीमुथियुस 3:16, 17; 2 पतरस 1:19–21)। वचन की बात न सुन पाने का अर्थ पवित्र आत्मा का विरोध करना है (प्रेरितों 7:51)। पवित्र आत्मा का विरोध करने का अर्थ **पवित्र आत्मा को शौकित** करना है (देखें 1 थिस्सलुनीकियों 5:19)। आत्मा को शौकित करने रहने का अर्थ आत्मा को "बुझाना" है। आत्मा विश्वासियों के बीच एकता चाहता है (4:3) और कलीसिया की एकता में रुकावट बनने वाली कोई भी चीज़ जो यहां पर गलत बोलचाल और काम हैं, आत्मा को शौकित करती है। "शोकित" (*lupeō*) का अर्थ है "अत्यधिक मानसिक या भावनात्मक निराशा देना।"[25] और यह यशायाह 63:10 का स्मरण कराती है जहां भविष्यवक्ता ने इस्राएलियों के विरोध की बात करते हुए कहा था कि उन्होंने "उसके पवित्र आत्मा को खेदित किया।"

आत्मा को शोकित न करने के प्रेरक के रूप में पौलुस ने जोड़ा, **जिस से तुम पर छुटकारे के दिन के लिए छाप दी गई है**। पौलुस ने पहले इस बात की पुष्टि की थी कि इफिसियों को मसीह में आने के समय छुड़ाया गया था (1:7) और उन्हें उनके अन्तिम छुटकारे के दिन के लिए आत्मा के साथ छाप की गई थी (1:13, 14)। आत्मा की छाप उस पूरी मिरास का बयाना था जो युग के अन्त और मसीह के आगमन के समय दिया जाना था। मसीही लोगों पर वर्तमान के लिए परमेश्वर के पवित्र व्यवहार के साथ मोहर किया गया था और उन्हें महिमामय भविष्य का आश्वासन दिया गया था। पौलुस का ज़ोर इस बात पर था कि बपतिस्मे के समय आत्मा का दिया जाना (देखें प्रेरितों 2:38) परमेश्वर के साथ उनके अनन्त निवास के आश्वासन के रूप में आत्मा की छाप के साथ आया था। इसलिए वचन और काम में उनके इस समय के जीवन से आत्मा को आनन्द मिलना चाहिए न कि शौक।

"कड़वाहट से कोमल हृदय के बन जाओ" (4:31, 32)

31सब प्रकार की कड़वाहट और प्रकोप और क्रोध, और कलह, और निन्दा सब बैरभाव समेत तुम से दूर की जाए। 32और एक दूसरे पर कृपाल, और करुणामय हो, और जैसे परमेश्वर ने मसीह में तुम्हारे अपराध क्षमा किए, वैसे ही तुम भी दूसरे के अपराध क्षमा करो।

आयतें 31, 32. पौलुस ने एक अन्तिम मनाही और ताड़ना के साथ 4:1–32 की चर्चा को समाप्त किया। यह निर्देष नये हो चुके मन और नये मनुष्यत्व के साथ मेल खाते हैं। छह विशेष बुराइयों से बचा जाना आवश्यक है।

1. **कड़वाहट** (*pikria*) "बीते समय की नाराज़गी मन में रखने वाली मन की कठोरता" की बात करता है।

2. **प्रकोप** (*thumos*) ''तैश में आने को'' कहा गया है।
3. **क्रोध** (*orgē*) आयत 26 में इस्तेमाल किया गया शब्द ही है जो ''सताने वाली शत्रुता की भावना'' का सुझाव देता है।
4. **कलह** (*kraugē*) चिल्लाने जैसा ''क्रोध का बाहरी दिखावा'' है।
5. **निंदा** (*blasphēmia*) का अर्थ बुरी बातें कहना है।
6. **बैरभाव** (*kakia*) में दूसरों का हानि पहुंचाने के लिए कही गई कोई भी बात या काम।[26]

ये बुराइयां नये बने मन की नहीं हैं और आवश्यक है कि ये **दूर की जाएं,** जो *airō* का अवश्य माननीय रूप है जो मांग करता है कि किसी काम को तुरन्त आरम्भ किया जाए। यहां पर इफिसियों को तुरन्त ऊपर बताई गई बुराइयों को ''ठुकराना, हटाना ... मिटाना ... दूर करना'' आरम्भ करना आवश्यक था।[27]

दूर की जाने वाली बुराइयों की जगह पर उनके जीवनों में तीन खूबियां जोड़ी जानी आवश्यक थीं। ये खुबियां जिन से सामुदायिक एकता बनाने में सहायता मिलनी थी, उन बुराइयों के उलट थी जो समाज को नष्ट कर सकती थीं। **कृपाल** वर्तमान आवश्यमाननीय है और यह जारी रखी जाने वाली क्रियाा है। ''कृपाल'' *chrēstos* का अनुवाद है और इसमें ''अकृतज्ञयता के बावजूद ... भले कोमल, परोपकारी'' होना शामिल है।[28] **करुणामय** *eusplanchnos* ''तरसवान'' की तरह ही है।[29] *Eusplanchnos* का मूल अर्थ ''स्वस्थ अन्तड़ियां'' है।[30] *Splanchnon* का अर्थ पेट के अन्दर के अंग है। आम तौर पर इस शब्द का अनुवाद ''मन'' या ''हृदय'' किया जाता है क्योंकि माना जाता था कि पेट भावनाओं पर होता है।[31] **एक दूसरे के अपराध क्षमा करो** की प्रेरणा मसीह के द्वारा परमेश्वर की ओर से मिली क्षमा से मिली है। पत्र के पहले भाग पौलुस ने इस क्षमा पर ज़ोर दिया है जो इफिसियों को मिली थी। 4:1-32 उसने ज़ोर दिया कि इस क्षमा को जो मिली है कलीसिया के समुदाय के भीतर सम्बन्धों में जिया जाना आवश्यक है (देखें मत्ती 6:14, 15)।

4:17-32 की ताड़नाओं के साथ पौलुस ने इफिसियों के नाम पत्र की प्रासंगिकता के पहले भाग को समाप्त किया। कलीसिया के लोगों के लिए एक रहकर और नये मन पाकर अपने बुलाए जाने के योग्य चाल चलना आवश्यक था।

प्रासंगिकता

पहनावा पहनना, पुनरुत्थान की शैली (4:17-32)

यूहन्ना 11 अध्याय में हमें पता चलता है कि यीशु का प्रिय मित्र लाज़र मर गया था। यीशु के बैतनिय्याह में पहुंचने तक लाज़र को कब्र में रखे चार दिन हो गए थे। जब यीशु ने कब्र के द्वार से पत्थर हटाने के लिए कहा तो मारथा ने उत्तर दिया, ''हे प्रभु, उस में से अब तो दुर्गंध आती है क्योंकि उसे मरे चार दिन हो गए'' (यूहन्ना 11:39)। यीशु ने ज़िद की और पत्थर को हटा दिया गया। फिर उसने ऊंची आवाज़ से पुकारकर उसे बुलाया, ''हे लाज़र, निकल आ'' (यूहन्ना 11:43)। वचन हमें बताता है, ''जो मर गया था, वह कफन से हाथ पांव बान्धे हुए

निकल आया, और उसका मुंह अंगोछे से लिपटा हुआ था: यीशु ने उन से कहा, उसे खोलकर जाने दो'' (यूहन्ना 11:44)। लाज़र अब मृत्यु के अधिकार में नहीं था क्योंकि वह जीवित हो गया था। पहला काम उसे कब्र के कपड़े उतारना था और फिर उस व्यक्ति के कपड़े पहनना था जो अब बिल्कुल जीवित था।

रूपक में, जिसे पौलुस इफिसियों के पत्र में बता रहा था यही कहा गया है। अध्याय 2 के अनुसार इफिसी लोग परमेश्वर के सामने अपने पापों में मरे हुए थे, परन्तु उन्हें जिलाया गया था और उन्हें नया जीवन दिया गया था। कोई आत्मिक कब्र के कपड़े उतारकर पुनरुथान की शैली वाले कपड़े कैसे पहनता है? जैसा कि पौलुस ने इसके बारे में बताया है, उसने इसे तीन भागों में किया।

(1) *पुरानी भ्रष्टता* (4:17-19)।

> इसलिए मैं यह कहता हूं, और प्रभु में जताए देता हूं कि जैसे अन्यजातीय लोग अपने मन की अनर्थ रीति पर चलते हैं, तुम अब से फिर ऐसे न चलो। क्योंकि उनकी बुद्धि अन्धेरी हो गई है और उस अज्ञानता के कारण जो उन में है और उनके मन की कठोरता के कारण वे परमेश्वर के जीवन से अलग किए हुए हैं। और वे सुत्र होकर, लुचपन में लग गए हैं, कि सब प्रकार के गन्दे काम लालसा से किया करें (4:17-19)।

''अन्यजाति लोग'' के लिए हम ''अमेरिकी,'' ''यूरोपीय,'' या कोई और शब्द लगा सकते हैं और मान सकते हैं कि यह पैरा पौलुस की ओर से आज सुबह लिखा गया था। यह आज के विभिन्न समाजों का स्पष्ट विवरण है।

पौलुस ने उनके विचार की प्रक्रिया का वरण किया जो यीशु को नहीं जानते हैं: उनकी सोच अनर्थ है, और समझने की अपनी बुद्धि में वे अंधकार में हैं; जिस कारण वे अज्ञानी हैं। उनके मन खाली हैं, समझ अंधेरी और अंधर से अज्ञानता से भरे हैं। घाल-मेल भरे मन के कारण उनका जीवन भी घाल-मेल भरा है। वे सुन, लालसा और अतृप्त कामुक हो गए हैं।

4:17-19 का मुख्य शब्द ''कठोरता'' है। मनों के कठोर होने के कारण वे अज्ञानता से भर गए हैं। वे परमेश्वर की सच्चाइयों को सीखने से इनकार करते हैं। अपनी आज्ञानता के कारण वे अपने कामों के सही महत्व को समझने के अयोग्य हैं। ''कठोरता'' के लिए पौलुस के शब्द का अर्थ मूल में एक पत्थर था जो संगमरमर से कठोर था। बाद में चिकित्सकों द्वारा व्यक्ति के शरीरों में जमी चीज़ के लिए जो जोड़ों को मुड़ने से रोकती है अपना लिया गया। इसका इस्तेमाल टूटी हुई हड्डी के स्थान पर जुड़ने वाले घठ्ठे के रूप में भी किया जाता था जो ठीक हो गई है-यह जुड़ाव हड्डी से भी कठोर होता है। अन्त में इस शब्द को संवेदना की कमी में भी लागू किया जाने लगा। इसे किसी इतनी कठोर चीज़ के वर्णन के लिए इस्तेमाल किया जाने लगा, जो इतनी सख्त हो कि उसमें कोई अहसास न रहे।

पौलुस के अनुसार परमेश्वर से अलग व्यक्ति की यही स्थिति होती है। पाप वास्तविक मूल्यों के प्रति असंवेदनशील बनाकर उसके मन को सख्त कर देता है। वह सच्चाई के मानक को छोड़कर सही और गलत का अपना ही झूठा मानक बना लेता है। परिणाम भ्रष्टता का एक अक्खड़पन वाली जीवन शैली होती है जैसे यह एक सामान्य व्यवहार हो। शर्म खो चुकी है,

भद्रता भुलाई जा चुकी है। ऐसी स्थिति में व्यक्ति अपनी ही इच्छओं के रहम पर होता है; उसे इस बात की कोई परवाह नहीं होती कि किसके जीवन में परेशानी है या किसके भोलेपन को वह खत्म कर रहा है, उसे तो वह अपनी इच्छा के पूरा होने की चिंता होती है।

यीशु से मुलाकात से पहले हम उसी पुरानी भ्रष्टता में फंसे हुए थे, और हमारी सोच उलझन में थी। हम में से कुछ लोग झूठ बोलते या छल करते या चोरी करते थे। बहुतेरे तो दोगले और व्यर्थ बातें करने वाले थे। शायद हम लोगों का लाभ उठाते और सफलता की सीढ़ी चढ़ने के लिए हर तरीका अपनाते थे। अब सब कुछ बदल चुका है।

(2) *नई सृष्टि* (4:20–24)। उस आत्मिक नयेपन से जो मसीह में मिलता है हम मृत्यु के वस्त्र उतार रहे हैं और जी उठी जीवन शैली के वस्त्र पहन रहे हैं। उस प्रक्रिया में लगे लोगों की पहचान के चार गुण हैं।

हम आत्मकेन्द्रता से मसीह पर केन्द्रित होते हैं (4:20)। मसीह को जानने का क्या अर्थ है ? इसका अर्थ उसे और जो कुछ वह है स्वीकार करना है। अब हम व्यक्तिगत लालसाओं और इच्छाओं के पीछे नहीं भागते हैं। इसके बजाय हम यीशु को जान रहे हैं कि वह क्या चाहता है, उसे क्या पसन्द है, और उसकी क्या इच्छाएं हैं। जीवन का केन्द्र अब हम नहीं, बल्कि मसीह है।

हम अज्ञानता की जगह सच्चाई के आने पर भी आनन्द करते हैं (4:21)। यदि हम यीशु को जानते हैं, तो हम जानते हैं कि सच क्या है। यीशु ने यहूदियों से कहा था: "... यदि तुम मेरे वचन में बने रहोगे, ... तुम सत्य को जानोगे और सत्य तुम्हें स्वतन्त्र करेगा" (यूहन्ना 8:31, 32)। सच्चाई भ्रष्टता से बचने का हमारा रास्ता है। सच्चाई हमें संसार के प्रबन्ध को जैसा यह है वैसा देखने और सही निर्णय लेने में सहायता करती है। यीशु सच्चाई है; इसे जानना जीने के अडोल, न बदलने वाले मानक को जानना है।

हम निर्लजता से शुद्धता की ओर जाते हैं (4:22)। पहले हम पाप के प्रति असंवेदनशील थे। यीशु में हम पाप के प्रति अति-संवेदनशील हो गए हैं और हर कीमत पर इससे बचते हैं। नई सृष्टि बनने वाले के लिए सबसे बड़ी चिंता जीवन की शुद्धता है।

पाप के प्रति अपनी चेतनता और शुद्ध होने की अपनी प्रेरणा को खोना सम्भव है। यदि हम उन्हीं जगहों पर जाना जारी रखते हैं, उन्हीं लोगों से मिलना जारी रखते हैं और उन्हीं गतिविधियों में लगे रहते हैं जो यीशु को जानने से पहले हमारे जीवनों की पहचान थी, तो हम पाप के प्रति अपनी संवेदनशीलता को खो देंगे। ऐसा होने पर हम धार्मिक होने को खो देंगे।

परमेश्वर चाहता है कि हम पाप से भयभीत हों। हमें अपनी पुरानी जीवन शैली पर शर्म आनी चाहिए। यदि हम अपने आपको उन बातों से जो पाप से भरी हैं घिरे रखते हैं, तो हम उस उत्प्रेरक तत्व को जो परमेश्वर ने हमें वह जीवन देने में उकसाने के लिए दिया है जिसके लिए हमें मसीह में जीने के लिए बुलाया गया है, खो देंगे।

अब हमारे मन निंदा करने वाले नहीं हैं; इसके बजाय हमारे मन नये हो गए हैं (4:23)। बदला हुआ जीवन बदले हुए मन के साथ आरम्भ होता है। नया काम करने के लिए हमें पहले नया सोचना आवश्यक है। पौलुस ने रोमियों से कहा था, "और इस संसार के सदृश न बनो; परन्तु तुम्हारी बुद्धि के नए हो जाने से तुम्हारा चाल-चलन भी बदलता जाए, जिस से तुम परमेश्वर की भली, और भावती, और सिद्ध इच्छा अनुभव से मालूम करते रहो" (रोमियों 12:2)।

हम अपने मनों को कैसे बदलते हैं ? भक्तिपूर्ण विचारों पर विचार करना आरम्भ करने की योग्यता ज्ञान से ही आती है। कुलुस्सियों 3:10 में पौलुस ने लिखा, ''और नए मनुष्यत्व को पहिन लिया है जो अपने सृजनहार के स्वरूप के अनुसार ज्ञान प्राप्त करने के लिए नया बनता जाता है।''

हम नये जोश वाले, उत्साही और उपजाऊ मसीही ज्ञान के द्वारा बनते हैं, न कि भावना से। ज्ञान परमेश्वर के वचन से आता है। अपने मनों को उसके वचन से तृप्त करके हम भक्तिपूर्ण विचार करने लगेंगे। इससे हमारे जीने का ढंग प्रभावित होगा। हम ''नये मनुष्यत्व को पहन'' लेंगे ''जो परमेश्वर के अनुरूप सत्य की धार्मिकता और पवित्रता में सृजा गया है'' (4:24)।

(3) *वर्तमान व्यवहार* (4:25-29)। यदि हम कब्र के अपने आत्मिक वस्त्रों को उतारना चाहते हैं और सच्ची धार्मिकता और पवित्रता के नये वस्त्र पहनना चाहते हैं, तो व्यावहारिक रूप में इसका क्या अर्थ है ? पौलुस ने कुछ उदाहरण दिए कि नयेपन के लिए यीशु की ओर देखने पर हमारा व्यवहार कैसे बदलता है।

बेइमानी की जगह ईमानदारी ले लेती है (4:25)। लोग जो वे चाहते हैं उसे पाने के लिए झूठ बोलने के लिए भरमाए जाते हैं, पर अब हम वह काम नहीं करेंगे। मसीही लोगों के रूप में झूठ बोलने का हमारे जीवन में कोई काम नहीं है। पौलुस के कहने का अर्थ था कि सच्चाई के बिगाड़, बड़ा चढ़ाकर कहना, काम या कारोबार में हेराफेरी, वचन न निभा पाना, बहाने बनाना और अपने काम या उत्पादन को गलत ढंग से पेश करना सब झूठ ही में आता है।

झूठ को मारने का तरीका सच्चाई बताना है। हम जहां भी हैं हमें सच बोलना आवश्यक है। इसके अलावा हमें सच को प्रेम से बोलना आवश्यक है (देखें 4:15)। केवल इतना ही नहीं है कि हम क्या कहते हैं बल्कि यह भी आवश्यक है कि हम उसे कैसे कहते हैं, जो नई सृष्टि के रूप में हमारी पहचान है। जो सच हम बोलते हैं उसे हमारे उन लोगों के प्रति प्रेम से प्रेरित होना आवश्यक है जिन से हम बात करते हैं।

ईमानदार होने की हमारी और प्रेरणा क्या है ? क्योंकि हम एक-दूसरे के अंग हैं। यदि हमारे दिमाग हमारे मुंह की स्थिति के बारे में हमारे हाथों से झूठ बोलें तो हमें क्या कठिनाई आएगी। खाना खाने की कोशिश करना विनाशकारी होगी। जब तक हर अंग ईमानदारी से दूसरे अंग के साथ पेश नहीं आता तब तक शरीर सही ढंग से काम नहीं कर सकता।

बेकाबू भावनाओं की जगह संयमित भावनाएं ले लेती हैं (4:26, 27)। क्रोध परमेश्वर द्वारा दरी गई एक भावना है, क्रोध अपने आप में गलत नहीं है। यीशु ने भी कई अवसरों पर क्रोध किया (देखें मरकुस 3:5)। क्रोध आम तौर पर हम से गलत काम करवाता है।

समाचार पत्र घरेलू लड़ाइयों, गोली चलने और अन्य प्रकार की हिंसा की कहानियां बताते हैं। क्रोध बेकाबू हो जाता है।

पौलुस ने कहा कि हमें इस प्रकार से काम नहीं करना है। क्रोध में होने के बावजूद हम पाप न करें। हमें अपनी भावनाओं को वश में रखना है। यदि किसी ने हम में क्रोध दिलाया है, तो हमें आज ही बड़े शांतमयी ढंग से उसके साथ निपटना चाहिए। हम क्रोध को दिन प्रतिदिन जमा या इकट्ठा नहीं होने दे सकते। यदि हम ऐसा करते हैं तो हम अपने आपको गलत ढंग से व्यवहार करते हुए पा सकते हैं। इसके बजाय जब हम किसी दूसरे से पहले क्रोधित हों, तो हमें चाहिए कि हम उस भाई या बहन के पास जाकर प्रेम से उस चिड़ के कारण को सुलझाएं। यदि

हम ऐसा नहीं कर पाते हैं तो हम शैतान को अपने जीवनों में आने का अवसर दे रहे हैं। समय के साथ वह हमें क्रोध के द्वारा नष्ट कर सकता है।

चोरी करने की जगह भलाई ले सकती है (4:28)। पौलुस ने सामान्य अर्थ में चोरी करने की बात की, पर हम कुछ विशेष बातें बता सकते हैं। मसीही व्यक्ति को कार या बाज़ार से अंगूरों का गुच्छा नहीं चुराना चाहिए। मसीह की देह के अंगों के रूप में हमें हिसाब-किताब में हेरफेर न करें या कर्ज़ निपटाने से इनकार न करें। हमें खरीदारी करने पर पैसे देते समय अधिक लौटाए जाने पर गलती को सुधारना चाहिए। सवाल चाहे बड़ी चोरी का हो या छोटी का, पौलुस ने एक ही उत्तर दिया, ''चोरी मत करो।''

गन्दी बातों की जगह अच्छी बातें ले लेती हैं (4:29)। नई सृष्टि के रूप में हमें अपने बोलचाल को भी बदलना आवश्यक है। संसार को जल्दी से यह बताने का कि हम वह पुराने लोग नहीं रहे तरीका अपने मुंह को साफ़ कर लेना है। पौलुस कह रहा था, ''तुम्हारे मुंह में से कोई गन्दी [मूल में, ''गली हुई''] बात न निकले।'' हमें हमें स्राप देने की बातों, गप्पों, फड़ों और अनुपयुक्त चुटकलों से बचना चाहिए। हमें अपने मुंह और बातचीत से की जानी वाले किसी भी नकारात्मक ढंग की गंदी बातों को छोड़ दूसरों को प्रोत्साहित करने वाली और उनकी उन्नति करने वाली मसीह की बातें करनी चाहिए।

सारांश। इफिसियों 4:30 कहता है, ''परमेश्वर के पवित्र आत्मा को शोकित मत करो, जिस से तुम पर छुटकारे के दिन के लिए छाप दी गई है।'' जिस दिन परमेश्वर ने पवित्र आत्मा के साथ हम पर एक मोहर के साथ छाप दी थी जो दिखाता है कि हम उसके हैं (देखें 1:13, 14)। उस के हमारे अन्दर वास करने पर या तो उसे आनन्दित कर सकते हैं या परेशान कर सकते हैं। हम यह कैसे सुनिश्चित करें कि हम उसे शोकित नहीं कर रहे थे? ''सब प्रकार की कड़वाहट और प्रकोप और क्रोध, और कलह, और निन्दा सब बैरभाव समेत तुम से दूर की जाए। और एक दूसरे पर कृपाल, और करुणामय हो, और जैसे परमेश्वर ने मसीह में तुम्हारे अपराध क्षमा किए, वैसे ही तुम भी दूसरे के अपराध क्षमा करो'' (4:31, 32)।

जब हम छुटकारा न पाए हुए लोगों के व्यवहारों और कामों में अपने आपको सजाते हैं, तो हम उस आत्मा को शौकित करते हैं जिसने हमें एक उच्च जीवन शैली के लिए बुलाया है। जब हम आत्मिक रूप में मरे हुए की जगह धार्मिकता के वस्त्र पहन लेते हैं तो हम ने सही लिबास पहन लिया है जो जी उठी जीवन शैली है। इससे आत्मा को आनन्द मिलता है जिसने हमें मसीह में नया जीवन दिया है।

क्रिस बुलर्ड

टिप्पणियां

[1]एंड्रयू टी. लिंकोन, *इफिसियंस,* वर्ड बिब्लिकल कमैंट्री, अंक 42 (डलास: वर्ड बुक्स, 1990), 277. [2]स्पायरस जोडिएट्स, संपा., द *कम्पलीट वर्ड स्टडी न्यू टैस्टामेंट,* 2रा संस्क. (चटनूगा, टैनिसी: एजीएम पब्लिशर्स, 1991), 953-54. [3]द *एक्सपोजिटर'स ग्रीक टैस्टामेंट,* संपा. डब्ल्यू. रॉबर्टसन निकोल (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1967), 3:340 में. एस. डी. सैलमण्ड, ''द एपिस्टल टू द इफिसियंस।''

[4]वाल्टर बाउर, *ए ग्रीक-इंग्लिश लैक्सिकन आफ़ द न्यू टैस्टामैंट एंड अदर अर्ली क्रिश्चियन लिटरेचर,* 3रा संस्क., संशो. व संपा. फ्रैडरिक विलियम डैंकर (शिकागोः यूनिवर्सिटी ऑफ़ शिकागो प्रैस, 2000), 508. [5]केन्नथ एस. वुएस्ट, *वुएस्ट'स वर्ड स्टडीज़ फ्रॉम द ग्रीक न्यू टैस्टामैंट फॉर द इंग्लिश रीडरः इफिसियंस एंड कोलोसियंस* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगनः विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1953), 107. [6]सैलमण्ड, 340. [7]सी. जी. विल्के एंड विलिबल्ड ग्रिम, *ए ग्रीक-इंग्लिश लैक्सिकन आफ़ द न्यू टैस्टामैंट,* अनु. व संशो. जोसेफ हेनरी थेयर (एडिनबर्गः टी. एंड टी. क्लार्क, 1901; रिप्रिंट, ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगनः बेकर बुक हाउस, 1977), 169, 111. [8]लिंकोन, 280. [9]वुएस्ट, 109. [10]लिंकोन, 284.

[11]वुएस्ट, 110. [12]वही। [13]जोडिएट्स, 869, 866. [14]एथलबर्ट डब्ल्यू. बुलिंगर, *ए क्रिटिकल लैक्सिकन एंड कन्कोर्डैंस टू द इंग्लिश एंड ग्रीक न्यू टैस्टामेंट* (लंदनः सेमुएल बैगस्टर एंड सन्स, तिथि नहीं; रिप्रिंट, ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगनः ज़ौंडरवन पद्बिलशिंग हाउस, 1975), 499. [15]वुएस्ट, 111. [16]सैलमण्ड, 345. [17]वुएस्ट, 112. [18]लिंकोन, 302. [19]वुएस्ट, 114-15 से लिया गया। [20]जोडिएट्स , 867.

[21]लिंकोन, 304. [22]सैलमण्न्ड, 347. [23]वही। [24]लिंकोन, 306. [25]बाउर, 604. [26]ये परिभाषाएं लिंकोन, 308-9; वुएस्ट, 117 में दी गई हैं। [27]जोडिएट्स, 882. [28]बुलिंगर, 431. [29]वुएस्ट, 117. [30]बाउर, 413.

[31]वही, 938.